श्रीमतेरामानुजाय नमः
श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः

श्रीजानकीस्तवराज

(श्रीजानकीकृपाकटाक्षस्तोत्रसहितम्)



संकलनकर्ता

आचार्य धीरेन्द्र

(भागवत प्रवक्ता, व्याकरणाचार्य, ज्योतिषाचार्य)

अनन्त श्रीविभूषित श्रीमद्जगद्गुरु

स्वामी श्रीरोहिणीप्रपन्नाचार्य जी महाराज

पुरानी लङ्का आश्रम, चित्रकूट धाम म.प्र.

इस अलौकिक संग्रह को प्राप्त करनें के इच्छुक पाठकगण निम्नलिखित पते या फोन नम्बर पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. **आचार्य श्री धीरेन्द्र जी**
   कान्हादर्शन ज्योतिष केन्द्र
   अखिलभारतीय त्रिपुरसुन्दरी शक्ति समिति (रजि.)
   117 गोविन्द खण्ड विश्वकर्मा नगर दिल्ली - 110095
   फोन नं. 09871662417
   Email : dpkanha@gmail.com
   Web : www.acharyadhirendra.com
   Web : www.tripursundri.org
   Email : info@tripursundri.org
2. **श्रीमोहनराम मन्दिर,** शहडोल (म. प्र.)
3. **श्रीनृसिंह मन्दिर,** पुरानी बस्ती अमरपाटन (म. प्र.)
4. आश्रम भटनवारा सतना (म. प्र.)
5. श्रीहनुमान मन्दिर बाघा (उ. प्र.)
6. **पुरानी लङ्का आश्रम**
   चित्रकूट धाम (म. प्र.)
   फोन नं. 9425342122
7. **आचार्य श्री सुरेन्द्र जी** (दिल्ली)
   फोन नं. 09213629513
8. **शिवेन्द्रमणि पाण्डेय**
   ग्रा. पो. बड़ी हरदी जिला रीवा (म. प्र.)
   फोन नं. 09971770118-09213629513

9- **श्री राजेन्द्र गोस्वामी जी**
   58-ए/1,औद्योगिक क्षेत्र, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-95
   फोन नं. 09810102024

प्रथम संस्करण : फाल्गुन कृष्णपक्ष (महाशिवरात्रि) संवत् २०६६, सन् 2010
कुल प्रतियाँ : 1100
मूल्य : (स श्रद्धया पाठः)



पुरानीलंका आश्रम
स्वामी श्री रोहिणीप्रपन्नाचार्य जी का एक परिचय

जगद्गुरु स्वामी श्रीरोहिणीश्वर प्रपन्नाचार्य जी का जन्म जिला रीवा ग्राम: बधरा द्विवेदी ब्राह्मण के घर में हुआ। आश्रम पुरानीलङ्का चित्रकूट के महन्त पद का स्थान ग्रहण कर तरुण तपस्वी होने के कारण निरन्तर आश्रम के कार्य में कटिबद्ध हैं। उत्तरोत्तर आश्रम की सृष्टि तथा शिष्य वर्गों को यात्रा से लाभ हो रहा है, विद्वान्, प्रभावशाली, तपस्वी आदि गुणों को देख कर जगदाचार्य समुदाय जगद्गुरु पद्वी से अलंकृत किया है। श्रीस्वामी जी के शिष्यों तथा दान दाताओं के द्वारा आश्रम निर्माण कार्य में आय के श्रोत की वृद्धि कर रहे हैं।

वर्तमान श्री स्वामी जी का धर्मयुक्त कार्य, सरलता, अमानी आदि अनेक गुण अनुकरणीय हैं। श्रीजानकी जी तथा पूर्वाचार्यों के सेवा में कटिबद्ध हैं। श्रीस्वामी जी की विशेष कृपा गरीबों व दीन-दुखियों पर होती है। सरल व दयावान् स्वभाव के कारण शिष्यों को श्रीस्वामी जी का सान्निध्य प्राप्त होता रहता है। दया, समता, सहनशीलता की श्रीस्वामीजी एक विशालप्रतिमा हैं,

श्रीस्वामी जी की प्रतिभा व प्रभाव अतुलनीय है। श्रीस्वामी जी निरन्तर ही धर्म के उत्त्थान में लगे रहते है। फलत: अनेकानेक ग्रामों में नगारों में अपनी मधुर वाणी से भक्तों को ओत प्रोत एवं अपनी विलक्षण वाग्धारा से धर्म के प्रति जागरुक बनाते हैं। जिनके दर्शनमात्र से सारे सन्ताप मिट जाते हैं, और अगाध शान्ति एवं पूर्णरूप से भगवत् कृपा प्राप्त होती है।

आचार्य धीरेन्द्र



आचार्यश्री का एक परिचय

आचार्य या गुरु श्रोत्रीय हो व ब्रह्मनिष्ठ भी यह शास्त्र आज्ञा है।

वैदिक संस्कृत परम्परा की विलक्षण वाक् धारा की उत्ताल उर्मि के रसमय एवं भावमय वाहक श्रद्धेय आचार्य श्री धीरेन्द्र जी का जन्म रीवा जिले के निकट ग्राम बड़ी हर्दी (म. प्र.) में 02.10.1979 को हुआ। आपके पूज्य पिता वैकुण्ठवासी पं. श्रीरविशंकर जी पाण्डेय एवं माता श्रीमती कुन्ती देवी पाण्डेय एक निष्ठावान् भगवत् प्रेमी हैं।

आपने प्रारम्भिक शिक्षा अपने ही जन्म स्थान में ग्रहण की। 1993 में आपनें महर्षि वेद विज्ञान विश्व विद्या पीठ जबलपुर (म.प्र.) में प्रवेश लेकर शुक्लयजुर्वेद, कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषशास्त्र का गहन अध्ययन किया, और 1998 से आपने श्रीधाम-वृन्दावन में स्थाई रूप से निवास कर सात वर्षों तक श्रीमद्भागवत् महापुराण का भावमय अध्ययन कर आपनें उपनिषदों, श्रीरामचरितमानस, श्रीमद्देवीभागवत्, श्रीबाल्मीकिरामायण के साथ-साथ अन्य पुराणों में एवं संगीत में भी प्रवेश लिया। आचार्य श्री ने आचार्य की परीक्षा सम्पूर्णानन्द विश्व विद्यालय से उत्तीर्ण की, आपके पिता आपको योग्य एवं निपुण वक्ता एवं धर्म प्रचारक के रूप में देखना चाहते थे। अत: आपने अथक परिश्रम करके, एवं जगदम्बा की कृपा से व श्रीराधाकृष्ण की महती अनुकम्पा से अट्ठारह वर्ष की आयु से ही श्रीमद्भागवत् का भावमय एवं रसमय प्रवचन एवं अध्ययन साथ-साथ करते आ रहे हैं। आपकी लेखन कार्य में रुचि प्रारम्भ काल से रही है, आपने बाल्यावस्था में ही सम्पूर्ण भारत के अनेक तीर्थों की यात्रा एवं साधना की।

आपने 08.02.2002 में 'अखिल भारतीय त्रिपुरसुन्दरी शक्ति समिति' की स्थापना की। इस समिति के माध्यम से समस्त प्राणियों को आध्यात्म

ज्ञान और संस्कृति परम्परा स्थाई रूप से चलती रहे, एवं जन-जन में भगवत् प्रचार-प्रसार की वृद्धि हो। यह संकल्प लिया आपकी मान्यता है कि मानव सेवा माधव तक पहुँचाती है। इस संकल्प से ऐसा विश्वास है कि हमारी ऋषि परम्परा, एवं संस्कृति का उत्थान होगा। आपकी शास्त्र सम्मत मान्यता है कि भागवत् एवं सभी सनातन ग्रन्थ भगवत् स्वरूप हैं सभी मनुष्यों को समस्त ग्रन्थों का पठन-पाठन कर ऋषि परम्परा का निर्वाह करना चाहिये। इसी धारणा से आचार्य श्री ने श्रीगुरुदेव 'अनन्त् श्रीविभूषित श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी श्रीरोहणीश्वर प्रपन्नाचार्य जी महाराज' की आज्ञानुसार "श्रीजानकी स्तवराज" का लेखन कार्य एवं प्रकाशन की जिम्मेदारी लेकर प्रथम श्रीजानकी मैया के चरणों में एवं श्रीगुरुदेव के चरणों मे पश्चात् समस्त भक्त समाज को समर्पित कर रहे हैं। आप साथ में गरीब ब्राह्मण बालकों को निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते आ रहे हैं। आपके ऊपर आदि शक्ति जगत् माता श्री त्रिपुरसुन्दरी का आशीर्वाद प्रारम्भ से ही प्राप्त रहा है, यही कारण है कि गुरुदेव भगवान् की कृपा से इतनी कम अवस्था में अनुपम उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं। हमारी सभी भक्तों की ओर से एवं अपनी ओर से प्रभु परमेश्वर से प्रर्थना करते हैं की आपको ऐसी शक्ति प्रदान करे एवं शतायु प्रदान करें, ताकि समय-समय पर भक्तों को लाभ मिलता रहे।

पं. लवकुश शास्त्री (म.प्र)

समर्पण

परम प्रिय भगवत् प्रेमी एवं वैष्णवजन!

इस संसार सागर को अपनी विलक्षण कृपा विलासिता से चमत्कृत करने वाले एकमात्र आधार शेषशायी भगवान् श्रीलक्ष्मी-नारायण की परम दिव्य कृपा से तथा महती अनुकम्पा से गुरुदेव आचार्य श्रीधीरेन्द्र जी महाराज जी का अद्वितीय सङ्कलन 'श्रीजानकी स्तवराज' का विशुद्ध संस्करण प्रभु श्रीलक्ष्मीनारायण जी के श्री चरण कमलों में प्रत्यर्पित कर अतीव हर्षातिरेक वशात् परमानन्द का अनुभव कर रहा हूँ।

परम प्रेमी धर्म-बन्धुओं भगवत् सेवी कार्य प्रारब्ध प्रबल हो तब प्राप्त होता है या तो हम वर्तमान में बहुत अच्छे कार्य कर रहे हों, या तो फिर हमारे माता-पिता ने बहुत ही दिव्य कर्म किए हों तब मिलता है। दूसरी स्थिति यह बनती है कि हमारे ऊपर गुरुजनों की कृपा हो, मेरे अनुभव से तो भगवत् सेवी कार्य या मानव सेवी कार्य उपर्युक्त चमत्कृत वस्तुएँ हों तभी मिल सकती हैं। अन्यथा हम मात्र अपनी शक्ति के अनुसार एक पैर भी आगे नहीं बढ़ा सकते।

वास्तव में नर सेवा नारायण तक पहुँचा देती है, शास्त्रानुसार व्यक्ति को शुभकर्मों में लगे रहकर जीवमात्र की सेवा करते रहनी चाहिये। वास्तविकता भी यही है, जीवन का सार भी इसी में है।

मैं अपने आपको धन्य समझता हूँ कि भगवती माँ जानकी जी की सेवा के साथ-साथ जन मानस की भी सेवा मुझे प्राप्त हो रही है। साथ ही जगद्गुरु १००८ स्वामि श्रीरोहिणीश्वर प्रपन्नाचार्य जी का भी शुभाशीष प्राप्त हो रहा है।

प्रभु हम पर दया कर रहे हैं, तो हम भी उनकी याद क्यों न करें? नाम के सहारे याद करते रहें तो "याद आयेगी उनको कभी न कभी" निश्चित रूप से एक बार भी प्रभु की कृपा की दृष्टि हम पड़ जाय तो हमारा जीवन तो वैसे ही धन्य हो जायेगा। लेकिन प्यारे मेरे धर्म-बन्धुओं कुछ भी वस्तु ग्रहण करने के लिए पात्र की जरूरत पड़ती है। इसी प्रकार आध्यात्म जगत् में कुछ भी प्राप्त करने के लिए पात्रता ग्रहण करना परम् अनिवार्य है।

अन्तिम पङ्क्ति में पुनः श्री लक्ष्मी नारायण जी, भगवती श्रीजानकी जी के, व गुरुजनों के चरण कमलों में प्रणाम व बन्दन करता हूँ।

और निःस्वार्थभाव से अद्बितीय सङ्कलन "श्रीजानकीस्तवराज" प्रथम श्री लक्ष्मीनारायण जी के चरण कमलों में फिर आप सभी धर्म प्रेमी वैष्णव जनों को समर्पित करता हूँ।

ॐ नमो नरायणाय

राजेन्द्र गोस्वामी
9810102024

श्रीगणेशाय नमः

अथमङ्गलाचरणम्

ॐ वक्रतुण्डमहाकाय कोटि सूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।१।।
ॐ सर्वरूप मयीदेवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपं तां नमामि परमेश्वरीम्।।२।।
कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्बकादम्बिनीं
नितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनीसेविताम्।
नवाम्बुरुहलोचनामभिनवांबुदश्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये।।३।।
अशेषसंसारविहारहीन-
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता-
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि।।४।।
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्तेति मीमांसकाः
सोऽयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।।५।।
मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।७।।
।। इति।।

।। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः।।

✡ जानकी स्तवराज ✡

तां ध्याये स्तवराजेन प्रोक्तरूपां परात्पराम्।
आह्लादिनीं हरे:काञ्चिच्छक्तिं सात्वतसेविताम्।।१।।

श्रुतिरुवाच

कीदृशः स्तवराजोऽयं केन प्रोक्तः सुरेश्वर।
कथ्यतां कृपया देव! जानकीरूपबोधकः।।२।।

श्रीसंकर्षण उवाच

ब्रबीमि स्तवराजं ते श्रीशिवेन प्रभाषितम्।
श्रुतं श्रीवक्त्रतो दिव्यं पावनानां च पावनम्।।३।।
चकाराराधनं तस्य मन्त्रराजेन भक्तितः।
कदाचिच्छ्रीशिवोरूपं ज्ञातुमिच्छुर्हरेः परम्।।४।।
दिव्यवर्षशतं वेदविधिना विधिबेदिना।
जजाप परमं जाप्यं रहस्ये स्थितचेतसा।।५।।
प्रसन्नोभूत्तदा देवः श्रीरामः करुणाकरः।
मन्त्राराध्येन रूपेण भजनीयः सतां प्रभुः।।६।।

श्रीराम उवाच

द्रष्टुमिच्छसि यद्रूपं मदीयं भावनास्पदम्।
आह्लादिनीं परां शक्तिं स्तूयाः सात्वतसम्मताम्।।७।।
तदाराध्यस्तदारामस्तदधीनस्तया विना ।
तिष्ठामि न क्षणं शम्भो ! जीवनं परमं मम।।८।।

इत्युक्त्वा देवदेवेशो वशीकरणमात्मनः।
पश्यतस्तस्य रूपं स्वमन्तर्धानं दधौ प्रभुः।।९।।
श्रुत्वारूपं तदा शंभुः तस्याः श्रीहरिवक्त्रतः ।
अचिन्तयत्समाधाय मनः कारणमात्मनः ।।१०।।
अस्फुरत्कृपया तस्य रूपं तस्याः परात्परम् ।
दुर्निरीक्ष्यं दुराराध्यं सात्वतां हृदयङ्गमम्।।११।।
आश्रयं सर्वलोकानां ध्येयं योगिविदां तथा ।
आराध्यं मुनिमुख्यानां सेव्यं संयमिनां सताम्।।१२।।
दृष्ट्वाश्चर्यमयं सर्व रूपं तस्याः सुरेश्वरः
तुष्टावजानकीं भक्त्या मूर्तिमतीं प्रभाविनीम्।।१३।।

स्तुति प्रारम्भः

** चरणारविन्द **

वन्दे विदेहतनया पदपुण्डरीकं,
कैशोरसौरभसमाहृत योगिचित्तम् ।
हन्तुं त्रितापमनिशं मुनिहंससेव्यं,
सन्मानसालिपरिपीतपरागपुञ्जम् ।।१४।।

** चरणतल **

पादस्य यावकरसेन तलं सुरक्तं,
सौभाग्यभाजनमिदंहि परं जनानाम्।
युक्तीकृतं सुभजतां तव देवि नित्यं,
दत्ताश्रयं सुमनसां मनसानुरागम्।।१५।।

** अंगुली **

पादङ्गुलीनखरुचिस्तव देविरम्या,
योगीन्द्रबृन्दमनसा विशदा विभाव्या।
त्रैताप क्लान्त्युपशमाय शशांककान्ति,
र्दोषेण किं समुपयाति तुलां युता सा।।१६।।

** नूँपुर **

मञ्जीरधीरनिनदं कलहंसकाली,
हासाय सा भवति भावयति त्वदीयम्।
किञ्चायरं रसिकमौलिमनो नियन्तुं,
दृष्टं मया परमकौशलमत्र तस्य।।१७।।

** गुल्फ **

सिद्धीशबुद्धिवररञ्जनगूढगुल्फौ
पादारविन्द युगलौ जनतापवर्गौ।
विन्दन्ति ते त्रिभुवनेश्वरि! भावसिद्धिं,
ध्यायन्ति ये निखिल सौभगभानुभाजौ।।१८।।

श्रीचरण

हेमाभिवर्द्धितविभूषणभूषितन्ते,
त्रैलोक्यतेज इव मञ्जुल-पुञ्जभूतम्।
भावामि सुन्दरि पदं सरसीरुहाभं,
भीताभयप्रदमनन्त मनोभिध्येयम्।।१९।।

नितम्ब

चक्राभहारिंसुनितम्बयुगं भवत्यः,
ध्येयं सुधीभिरनिशं रसनाभिषक्तम्।

ध्यानास्पदं रघुपतेर्मनसो मुनीनां,
भावैकगम्यममरेशनताङ्घ्रिपद्मे ।।२०।।

कटि

कौशेय वस्त्र परिणद्धमलंकृतं ते,
कार्तस्वराशनिमणि प्रवरप्रवेकैः ।
रत्नोत्तमै रसनया ग्रहकान्तिमद्भि-
र्भास्वन्ति निर्मिततया स्वधियन्ति मध्यम्।।२१।।

उदर

अश्वत्थ एत्रनिभमम्ब धियोदरन्ते,
भव्यं भवाधितरिकेवलकालनाशे ।
भूयो न भावि जननी जठरे निवास,
स्तेषां मनो धरणिजेऽत्र सुलग्नमासीत्।।२२।।

नाभि

नाभीहृदं हरिमनः करिणः कृशांशो,
पुष्टिप्रदं प्रचलितं त्रिवलीतरङ्गम्।
राजिसुशैवलनिभं भ्रमिभूतरोम्णां,
शान्त्यै तव त्रितपतामतिभावयामः।।२३।।

वक्षोज

नीलाभकञ्चुकमणीन्द्रसमूहनिष्कै-
र्वक्षोजयुग्ममतितुङ्गमलङ्कृतंते।
हारैर्मनोहरतरैस्तरुणि!क्षितीजे!
सौन्दर्यवारिनिधिवारितरङ्गसङ्गम्।।२४।।

बाहु

बाहूमृणालमदखण्डनपण्डितौ ते,
भीताभयप्रदवदान्यतमौ जनानाम्।
रुक्माङ्गदाङ्कित-बिटङ्कितमुद्रिकौ तौ,
हैरण्यकङ्कणधृतावलयौ भजामः।।२५।।

कण्ठ

कण्ठं कपोत-तरुणीगलकान्तिमोषं,
भूषैरनेकविधभूषित-मम्ब तुभ्यम्।
ध्यायेम मानसविशुद्धिकृते कपालो,
योगीन्द्रभावितपदे शमदे शरण्ये।।२६।।

मुखमण्डल

वक्त्रेन्दुमिन्दुचयखण्डितमण्डितांशु,
खण्डांशपण्डितमनः परिदण्डिताशम्।
सनमानसाब्जमुदितद्युतिदं वरेण्यं,
रामाक्षितारक चकोरमहं भजे ते।।२७।।

मुख

ताम्बूलरागपरिरञ्जितदन्तपंक्ति,
प्रद्योतिताधरमधः कृतबिम्बरागम्।
ईषत्स्मितद्युतिकटाक्षविकाशिताशं,
वक्त्रंपरेशनयनास्पदमाभजे ते।।२८।।

नकबेसर

नासाग्रमौक्तिकफलं फलदं परेशे,
ध्यायन्ति ये च निजजाड्यविनाशहेतो।

त्रैलोक्यनिर्मलपदं सुमुखं त्वदीयं,
स्वेच्छाभिकांक्षिण इदं बहुसो रसज्ञाः।।२९।।

नेत्र

ज्ञानं निरञ्जनमिदं विवदन्ति ये ते,
मुह्यन्ति सूरिनिवहास्तरुणीकटाक्षैः।
नालोकयन्ति नितरां तव देवितावद्,
दीर्घायुषाक्षियुगमञ्जनरञ्जितं ते।।३०।।

भौहें

भ्रूवल्लरीविलसितं जगदाहुरीशे,
व्यासादयो मुनिवरास्तुत एव नित्यम्।
नाशाय तस्य तरुणीतिलके त्वदीया,
पाशीकृता हरिमनोमृगबन्धनाय।।३०।।

भाल

भालं विशालमतिसौभगभाजनं ते,
सिन्दूरविन्दु रुचिरद्युति दीप्तिमन्तम्।
पिण्डीकृतःकिमुतराग इतीव तस्मिन्,
प्रद्योतते जननि जागतजन्मभाजम्।।३२।।

कर्ण

आदर्शवर्तुलकपोलबिलोललोलं,
कर्णावतंस युगलं जनजाड्यनाशम्।
सूर्यादिकान्तिहरमाश्रयमोजसान्ते,
तीव्रं धिया धरणिजे स्वधियन्तिधीराः।।३३।।

कर्णफूल

कालोविभेति जगतामतिभक्षकस्ते,
जैवातृको भवदसीमगुणो यतो सौ।
सर्वातिवल्लभतया भजनीय रूपे,
मन्यामहे हरिरिति श्रुतिभूषसारम्।।३४।।

केश पाश

सीमन्तमम्बतव सुन्दरतातिसीमं,
मुक्ताविभूषितमलं समभागभाजम्।
निःसीमतापदकृते यतयो यतन्ति,
जानीमहे महितवन्दितसीममूर्ते।।३५।।

वेणी

कालाहिभीतिभजतामहिभोगभिन्ना,
पायात्परेश्वरि सतामवती सदानः।
एणीदृशस्तव विशालतरा नुवेणी,
दर्भाग्रभागसदृशी सुदृशां त्रिलोक्याः।।३६।।

साड़ी

साटीसुसूक्ष्मतरातिगतानि नीला,
सौवर्णसूत्र कलिता कृपयावृताते।
भर्तुःस्वरूपमनुभावयतां जनानां,
प्रीत्यै करोषि परदेवि यदापिधानम्।।३७।।

स्वरूपवर्ण वर्णन

पारे गिरा गुणनिधे! श्रुतयो वदन्ति,
रूपं त्वदीयमपरं मनसोप्यगम्यम्।

साक्षा कथं सरसिजाक्षि भवेद्दूते ते,
बुद्धौ कृपामनु कृशोदरि मादृशां तत्।।३८।।
किं चित्रमत्र जननि!प्रभया प्रकाश्यं,
विश्वं वदन्ति मुनयरतव देवि! देवाः।
आताश्रयस्त्रिभुवनैर्गुणतोभिवन्द्य-
स्त्राणादिकर्म विभवं परमस्य यस्याः।।३९।।
वेदास्तवाम्ब! विवदन्ति निजस्वरूपं,
नित्यानुभूतिभवभावपराः परेशैः।
निर्णेतुमद्य यतयस्तपसा यतन्ते,
बोधाय पादसरसीरुहयुग्मभृङ्गाः।।४०।।
जातं त्वदेव नितरां जगतां निदानं,
मन्यामहे तदिदमम्ब! कृतं श्रुतीनाम्।
सर्वंयतःखलु विचेष्टितमाशु शक्तेः,
कार्यं हि कारणगुणानवलम्ब विद्यात्।।४१।।
जानीमहे जननि! ते नयनारविन्द,
स्योन्मीलनेऽजनि जगत् क्षयस्तन्निमीलात्।
वैशम्यपशून्यसमतां समुपागते यत्स्यादस्य,
पालनभसंशयमस्य नूनम्।।४२।।
ज्ञातंत्वदीयमपरं चरितं विशालं,
भावं भवे ननुनिजे प्रकटीकरोषि।
प्रेम्णैव तैः प्रथमतः परमानुभावं,
भाव्यं पदाब्जमनिशं स्वजनैरतस्ते।।४३।।
येषामदः परमवस्तु च तज्जनानां,
प्रद्योतते जनकजाचरणारविन्दम्।

सर्वसमीक्ष्य इह कर्ममनोवचोभि-
बर्ह्मस्वरूपमतिदुर्लभतानुसेव्यम्।।४४।।
किं दुर्लभं चरणपङ्कजसेवया ते,
पूर्णारमन्ति रमणी यतया त्रिलोक्याम्।
वस्तुप्रकाशविशदं हृदयेत्वदीयं,
तेषामहो किमुत साधनकोटियत्नैः।।४५।।
धन्यास्त एव तव देवि पदारविन्दं,
स्यन्दायमानमकरन्दमहर्निशं ये।
भृङ्गायमानमनसो नितरां भजन्ते,
भावावबोधनिपुणाः परदेवतायाः।।४६।।
पादाब्जरागपरिरञ्जितचित्तभृङ्गो,
येषां समीक्ष्य इह जातमिदं स्वरूपम्।
तेषां न किं प्रवदते परितो वरिष्ठं,
साध्यं भवेदिह परत्र न किञ्चिदन्यत्।।४७।।
चुम्बन्ति चिद्धनमहोमकरन्दमस्या,
देवैर्मुनीन्द्रनिचयैरति दुर्लभं ते।
पादाब्जयोरतिविकाशविलासबोधः,
स्यादेव देवि तवकान्तनिजस्वरूपे।।४८।।
यावन्न ते सरसिजद्युतिहारिपादे,
नस्याद्रति-स्तरु-नवाङ्कुर-खण्डिताशे,
तावत्कथं तरुणमौलिमणे जनानां,
ज्ञानं दृढं भवति भामिनि रामरूपे।।४९।।
साक्षात्तपोव्रतयमैनियमैः समीहे,
कर्तुंकृपामृतमिह प्रसभं स्वरूपम्।

नाथस्यते श्रुतिवचोविषयं कथं स्या-,
न्मूढोवृथोत्सृजति देवि सुखान्यमूनि।।५०।।
योगाधिरूढमुनयो हरिपादपद्मे,
ध्यायन्ति ये चरण पङ्कजयुग्ममन्तः।
वाञ्छति निघ्नशततोप्यनिवार्यमाणां,
भक्तिं भवाब्धितरणाय कृपापयोधे।।५१।।
चार्वङ्किते चरणचारणवन्दिसङ्गं,
मह्यं विदेह तनये परिदेहि नान्यम्।
याचेवरं वरविदां वरदे भवत्या,
येनामुना तव धवे मम रञ्जना स्यात्।।५२।।
याचेऽहमम्ब रघुनन्दनमूर्तिभावं,
सार्द्धं त्वयातिदृढ मञ्जलिनाविशेषम्।
त्वं देहि वेत्तृ वरदे मुनिसङ्घमुख्या-,
मन्यन्तिवल्लभतरां स्वपतेभवन्तीम्।।५३।।

उपसंहार

एवंस्तुत्वा परं रूपं जानक्या जाड्यनाशनम्।
उपारराम शान्तात्मा योगेश्वरः सदाशिवः।।५४।।
निरीक्ष्य तन्मुखाम्भोजं भावयन् रूपमद्भुतम्।
कांक्षं स्तस्याः परां भक्तिं पादपङ्कजयोर्दृढाम्।।५५।।
उवाच तं वरारोहा जानकी भक्तवत्सला।
एवमस्तु महादेव यत्त्वयोक्तं च नान्यथा।।५६।।
अन्यत्ते कांक्षितं ब्रूहि दास्यामि देवदुर्लभम्।
सत्यांमयिकृपोन्मुख्यां न किञ्चित्तस्यदुर्लभम्।।५७।।

प्रसन्नवदनां दृष्ट्वा सोपि देवशिरोमणिः।
ययाचे वरमात्मीयं रहस्यं भावबोधकः।।५८।।
प्रादात्तस्मैवदान्या सा यद्यन्मनसिकाङ्क्षितम्।
वरं-वरेश्वरी साक्षात्पुनरुवाच सा हितम्।।५९।।
अयं पवित्रमौलिर्मे स्तवराजः त्वयाशिव।
प्रकाशितोतिगोप्योपिमत् प्रसादात्सुरोत्तम।।६०।।

फलश्रुति निष्काम

यः पठेदिममग्रे मे पूजाकाले प्रयत्नतः।
तस्येहामुत्र किञ्चन्न वस्तुस्याद्दूगगोचरम्।।६१।।

फलश्रुति सकाम

धनं धान्यं यशः पुत्रानैश्वर्यमतिमानुषम्।
प्राप्येहामोदते भूयो मत्पदं तद्व्रजेत्सह।।६२।।
यद्यल्लोकोत्तरं वस्तु त्रिषुलोकेषु दृश्यते।
तत्सर्वमस्य पाठेन प्राप्नुयाद्धुविमानवः।।६३।।

आज्ञा

इदं मे परमैकान्तं रहस्यं सुर सत्तम।
न प्रकाश्यं त्वयाशम्भो शठाय भावद्वेषिणे।।६४।।
भक्तिर्यस्यातिदेवेशे सर्वैश्वर्ये तथामयि।
गुरौसर्वात्म भावेन विद्यतेभक्तिरुत्तमा।।६५।।
तस्मैदेयं त्वया शम्भो भावनार्द्रहृदे गुरौ।
सर्वभूत हितार्थाय शान्ताय सौम्यमूर्तये।।६६।।
इत्क्त्वा भावनामूर्तिः सीता जनक नन्दिनी।
कृपापात्राय तस्मै सा पुनः प्रादाद्वरान्तरम्।।६७।।

सर्वदुःखप्रशमनं जानक्यास्तु प्रसादतः।।६८।।

।। श्रीजानकी स्तवराज सम्पूर्णम् इति शुभम् ।।

* श्रीकिशोरी जी का चरमशरणागत मन्त्र *

ॐकृपारूपिणिकल्याणि रामप्रिये श्री जानकी।
कारुण्यपूर्णनयने दयादृष्टयावलोकये।।

श्री किशोरी जी का व्रत

पापानां वा शुभानां वा वधार्हार्णां प्लवङ्गम।
कार्यं कारुण्यमार्येण न कश्चिन्नापराध्यति।।

अथ शरणागति पञ्चकम्

ॐसर्वजीव शरण्ये श्रीसीते वात्सल्य सागरे।
मातृमैथिलि सौलभ्ये रक्ष मां शरणागतम्।।१।।
कोटि कन्दर्प लावण्यां सौन्दर्य्यैक स्वरूपताम्।
सर्वमङ्गल माङ्गल्यां भूमिजां शरणं ब्रजे।।२।।
ॐशरणा गतदीनार्त परित्राणपरायणम्।
सर्वस्यार्ति हरेणैक धृतव्रतां शरणं ब्रजे।।३।।
ॐसीतां विदेह तनयां रामस्य दयितां शुभाम्।
हनुमता समाश्वस्तां भूमिजां शरणं ब्रजे।।४।।
ॐअस्मिन् कलिमला कीर्णे कालेघोर भवार्णवे।
प्रपन्नानां गतिर्नास्ति श्रीमद्राम प्रियां विना।।५।।

।। इति जानकीचरमशरणागत मन्त्र ।।

***

श्रीजनकजा प्रपत्ति सारस्तोत्रम्

न वाग्वपुर्बुद्धिभिरेव कस्यचित्
कदापि हिंसास्तु शरीरिणा वृथा।
भवत्यदाम्बोरुह चिन्तनं विना न
चाप यात्वदम्बुज वीक्षणेक्षणः।।१।।
हसन्तु निन्दन्तु वदन्तु दुर्वचो
जनानियुक्ता हृदयस्थितेन वै।
केनापिदेवेन दयाश्रितं सदा न
संस्थितिं स्वां प्रजहास्तु मे मनः।।२।।
निन्दाभयं मेऽस्तु तथा न जातु
चिद्यथेह निद्रा चरणान्ममोरसि।
परोपकाराय सदास्तु मे मतिर्न
चापकाराय कदापि कस्यचित्।।३।।
माक्रूर दृष्टिर्मम सत्सु भूयान्निरी
क्ष्यमाणोस्य सकोप नेत्रैः।
मा सेवतस्तान विपक्वबुद्ध च
साधून्मदो मे हृदयं वृणोतु।।४।।
अपात्र पूजा न च पात्रहेलनं
तिरस्क्रिया नाप्यपराध्यतां सताम्।
अदण्डच्च दण्डेस्तु न मे कृतघ्नता
मयो क्रिया कापि विदेहनन्दिनी।।५।।
योषित्सु सर्वासु च मातृबुद्धि-
स्तथास्तु मे स्वसृमतिःप्ररूढाः।

बालेषु सर्वेषु च बन्धुबुद्धिर्मा-
नीच बुद्धिः सततं ममास्तु।।६।।
विश्वासघातो न तथा कदर्यता ना
भक्ष्यपेयाशनपानमस्तु मे।
न शास्त्र संवर्जित कर्मसुस्पृहा
कदापिभूयान्महिते महीयसाम्।।७।।
सहिष्णुता क्षान्तिरमन्दशुमुषी-
वात्सल्यताऽव्याज कृपा विनम्रता।
उदारता ह्री मृदुता सुशीलता न
जातु चैता हृदयं त्यजन्तु मे।।८।।
मदाश्रिताः क्लेशयुता न सन्तु वै
विशेषतो भागवता उपेक्षया।
नाऽग्यागताःक्रूरगिरा दृशार्दिता
समुछ्वसन्तु स्मयदूषितात्मनः।।९।।
ऋते त्वदुच्छिष्टमथान्यवस्तुषु-
स्याद्भोग बुद्धिर्न कदापिमामकी।
त्वदर्थमेवाऽखिलचेष्टितं हि मे
भक्तापराधो न कदापि मां स्पृशेत्।।१०।।
रतिः प्रवृत्तौ विरतिर्निवृत्तौ
सङ्गोऽसतां नास्तु सतामसङ्गः।
सर्वेषु सर्वास्वनुरागदृष्टिर्मा
दोषदृष्टिर्मम कर्हिचित्स्यात्।।११।।
स्वभृत्यसंपोषणसक्तचेतसा
नोपेक्षितःसन्तुमया-त्वदाश्रिताः।

लोभाद्भयाद्वा निजधर्मवर्जिताः
क्रियास्तु नो कापि तवानुकम्पया।।१२।।
स्वन्पोषमं मानुषमेत्य जज्म
स्वर्वासिमृग्यं क्षण भङ्गुरं च।
वैरं न कुर्यां तव तुष्टिकामः
केनाप्यहं श्री निमिवंश भूषे।।१३।।
न्यायालयं ते क्षमता प्रधानं
न्यायप्रधानं न वदन्ति सन्तः।
क्षान्तिरप्रधाना मातरस्तु तस्मा-
न्न्यायप्रधाना न मम क्षमाब्धे।।१४।।
भयं न मे स्याच्चरतः स्वधर्मं
कालादपिं प्राप्तविवेक दृष्टेः।
मत्तस्तथा तन्न पिपीलिकानां
सौभाग्यमेतत्कृपया प्रयच्छ।।१५।।
स्वशिक्षये वा दृढयन्स्वधर्मे
समाश्रितान्भागवते प्रधाने।
अनेक सांसारिक भोगशक्तं न
कांक्षितं जन्म चिराय लोके।।१६।।
त्वद्धामवासस्तव कीर्ति गानं
त्वन्नामसंकीर्तन मेव नित्यम्।
अम्बाशुभोत्सङ्ग विहारशीले
स्वरूपसंचिन्तनमस्तु मह्यम्।।१७।।
अन्यान्य देवार्चन वन्दनस्मृतिस्तव-
प्रपत्तिः श्रवणानुरागिता।

स्वप्नेऽपि भूयादिह भक्तिकोटिका
नानन्यता पाठपरायणस्यमे।।१८।।
पूज्यानुवन्द्या परिभावनीया-
ज्ञेयानुज्ञेया समुपासनीया।
श्रेयः परं कांक्षिभिरात्मनिष्ठै-
स्त्वमेवहित्वाखिल कर्म जालम्।।१९।।
स मे पिता सा जननी स बन्धुः
सखा स दाता स पतिः गुरुःसः।
कृपालुतोपेक्षित सर्वदोषः
सेवा सहायो य इहास्त्वमीहः।।२०।।
परमलालनैः पाल्यते त्वया
निरयकर्म कृन्मादृशो जनः।
करुणया यया हेतुहीनया कुरु
न मां तया सेवयोज्झितम्।।२१।।
विनय एव मेज्यऽहि साञ्जलिः
सुनयनाकभूषे प्रसीदतम्।
अनुदिनं तवोच्छिष्ट जीवतो
वनरुहाक्षि मो चेत्तु का गतिः।।२२।।

।। इति श्रीजनकजा प्रपत्ति सारस्तोत्रम् ।।

***

अष्टाक्षर-श्रीराममन्त्रस्तोत्रम्

श्रीराम:शरणं मम

लक्ष्मीनाथ समारम्भां नाथयामुन मध्यमाम् ।
अस्मदाचार्य पर्यन्तां वन्दे गुरुपरम्पराम् ।।१।।

ॐ

विश्वस्य चात्मनोनित्यं पारतन्त्र्यं विचिन्त्य च।
चिन्तयेच्चेतसा नित्यं श्रीराम:शरणं मम।।२।।
अचिन्त्योऽपि शरीरादे: स्वातन्त्र्येनैव विद्यते।
चिन्तयेच्चेतसा नित्यं श्रीराम:शरणं मम।।३।।
आत्माधारं स्वतंत्रं च सर्वशक्तिं विचिन्त्य च।
चिन्तयेच्चेतसा नित्यं श्रीराम:शरणं मम।।४।।
नित्यात्म गुण संयुक्तो नित्यात्मतनुमण्डित:।
नित्यात्मकेलिनिरत: श्रीराम:शरणं मम।।५।।
गुणलीलास्वरूपैश्च मितिर्यस्य न विद्यते।
अतोवाङ्मनसा वेद्य: श्रीराम:शरणं मम।।६।।
कर्ता सर्वस्य जगतो भर्ता सर्वस्य सर्वग:।
आहर्ता कार्य जातस्य श्रीराम:शरणं मम।।७।।
वासुदेवादिमूर्तीनां चतुर्णां कारणं परम्।
चतुर्विंशति मूर्तीनां श्रीराम:शरणं मम।।८।।
नित्यमुक्तजनैर्जुष्टो निविष्ट: परमे पदे।
पदं परमभक्तानां श्रीराम: शरणं मम।।९।।

महदादिस्वरूपेण संस्थित: प्राकृते पदे।
ब्रह्मादिदेवरूपैश्च श्रीराम: शरणं मम।।१०।।
मन्वादिनृपरूपेण श्रुतिमार्गं बिभर्तिय:।
या:प्राकृत स्वरूपेण श्रीराम:शरणं मम।।११।।
ऋषिरूपेण यो देवो वन्यवृत्तिमपालयत्।
योऽन्तरात्मा च सर्वेषां श्रीराम:शरणं मम।।१२।।
योऽसौ सर्वतनु: सर्व: सर्वनामा सनातन:।
आस्थित: सर्वभावेषु श्रीराम:शरणं मम।।१३।।
बहिर्मत्स्यादिरूपेण सद्धर्ममनुपालयन्।
परिपाति जनान्दीनान् श्रीराम:शरणं मम।।१४।।
यश्चात्मानं पृथक्कृत्य भावेन पुरुषोत्तम:।
आर्चायामास्थितो देव: श्रीराम:शरणं मम।।१५।।
अर्चावतार रूपेण दर्शनस्पर्शनादिभि:।
दीनानुद्धरते योऽसौ श्रीराम:शरणं मम।।१६।।
कौशल्या शुक्तिसञ्जातो जानकी कण्ठभूषण:।
मुक्ताफलसमो योऽसौ श्रीराम:शरणं मम।।१७।।
विश्वामित्रमखत्राता ताडकागतिदायक:।
अहल्याशाप शमन: श्रीराम:शरणं मम।।१८।।
पिनाकभञ्जन: श्रीमान् जानकीप्रेमपालक:।
जामदग्न्यप्रतापघ्न: श्रीराम:शरणं मम।।१९।।
राज्याभिषेकसंहृष्ट: कैकेयी वचनात्पुन:।
पित्रादत्तवनक्रीड: श्रीराम:शरणं मम।।२०।।
जटाचीरधरोधन्वी जानकी-लक्ष्मणान्वित:।
चित्रकूटकृतावास: श्रीराम:शरणं मम।।२१।।

महापञ्चवटीलीला सञ्जातपरमोत्सवः।
दण्डकारण्य संचारी श्रीरामःशरणं मम।।२२।।
खरदूषणविच्छेदी दुष्टराक्षस भञ्जनः।
हृतशूर्पनखाशोभः श्रीरामःशरणं मम।।२३।।
मायामृग विभेत्ता च हृतसीतानुतापकृत्।
जानकीविरहाक्रोशी श्रीरामःशरणं मम।।२४।।
लक्ष्मणानुचरोधन्वी लोकयात्राविडम्बकृत्।
पम्पातीर कृतान्वेषः श्रीरामःशरणं मम।।२५।।
जटायुगति दाता च कबन्धगतिदायकः।
हनुमत्कृतसाहित्य श्रीरामःशरणं मम।।२६।।
सुग्रीवराज्यदः श्रीशो बालिनिग्रह कारकः।
अङ्गदाश्वासनकरः श्रीरामःशरणं मम।।२७।।
सीतान्वेषणनिर्मुक्त हनुमत्प्रमुखब्रजः।
मुद्रानिवेशितबलः श्रीरामःशरणं मम।।२८।।
हेलोत्तरितपाथोधि-र्बलनिर्धूतराक्षसः ।
लङ्कादाहकरो धीरः श्रीरामःशरणं मम।।२९।।
रोषसम्बद्धपाथोधि - र्लङ्काप्रासादरोधकः।
रावणादिप्रभेत्ता च श्रीरामःशरणं मम।।३०।।
जानकी जीवनत्राता विभीषणसमृद्धिदः।
पुष्पकारोहणासक्तः श्रीरामःशरणं मम।।३१।।
राज्यसिंहासनारूढः कौशल्यानन्दवर्द्धनः।
नामनिर्धूतनिरयः श्रीरामःशरणं मम।।३२।।
यज्ञकर्त्ता यज्ञभोक्ता यज्ञभर्तामहेश्वरः।
अयोध्यामुक्तिदः शास्ता श्रीरामःशरणं मम।।३३।।

प्रपठेद्यः शुभं स्तोत्रं मुच्येत् भवबन्धनात्।
मन्त्रश्चाष्टाक्षरो देवः श्रीरामःशरणं मम।।४।।

।। इति अष्टाक्षर श्रीराममन्त्रस्तोत्रम् ।।

***

अनन्यताऽऽवेदनम्

शृणोमि सीतापति चित्रसत्कथां,
वदामि सीतापति कीर्तिमक्षयाम्।
स्मारामि सीतापति दिव्यविग्रहं,
वृणोमि सीतापति भक्तिमुत्तमाम्।।१।।
ब्रजामि सीतापतिदिव्यमन्दिरं,
तथा च सीतापतिसत्प्रपन्नताम्।
युनज्मि सीतापति चिन्तने मनः,
तनोमि सीतापतिदाससङ्गतिम्।।२।।
अवैमि सीतापतिमञ्जुबन्धुतां,
तथा च सीतापतिदिष्टभोग्यताम्।
ततश्च सीतापति नित्यधामदां,
करोमि सीतापति भक्तिमुत्तमाम्।।३।।
करोमि सीतापतिपाददासतां,
नमामि सीतापति पादपङ्कजम्।
पठामि सीतापतिकाव्यसंहतिं,
जपामि सीतापतिमन्त्रभूषितम्।।४।।
करोमि सीतापतिविग्रहार्चनं,
तथा च सीतापतिमूर्तिदर्शनम्।

गुणाब्धि सीतापति नाम कीर्तनं,
परेश सीतापतिपादवन्दनम्।।५।।
भजामि सीतापतिमेव केवलं,
रटामि सीतापतिमेव केवलम्।
श्रयामि सीतापतिमेव केवलं,
प्रयामि सीतापतिमेवकेवलम्।।६।।

।। इति अनन्यताऽऽवेदनम् ।।

***

श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नम:

अथ श्रीसीताराम कृपाकटाक्ष स्तोत्रम्

मुनीन्द्र वृन्दवन्दिते त्रिलोकशोक हारिणि,
प्रसन्नवक्त्र पङ्कजे निकुञ्ज भू विलासिनि।
विदेह भूपनन्दिनि नृपेन्द्रसूनु संगते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।१।।

अशोकवृक्ष वल्लरी वितान मण्डपस्थिते,
प्रवाल जाल पल्लव प्रभारुणाङ्घ्रि कोमले।
वराभयस्फुरत्करे प्रभूत सम्पदालये,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।२।।
तडित्सुवर्ण चम्पक प्रदीप्त गौरविग्रहे,
मुखप्रभापरास्त कोटि शारदेन्दु मण्डले।
विचित्र चित्र संचरच्चकोर शाव लोचने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।३।।

अनङ्ग रङ्ग मङ्गल प्रसङ्ग भङ्गुर भ्रुवां,
सु विभ्रमस्तु सम्भ्रमद् दृगन्त वाण पातनैः।
निरन्तरं वशीकृतावधेश भूपनन्दने,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।४।।
मदोन्मदादियौवने प्रमोदमान मण्डिते,
प्रियानुरागरञ्जिते कला विलास पण्डिते।
अनन्य धन्य कुञ्जराजि कामकेलि कोविदे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।५।।
विशेष हावभाव धीर हीर हार भूषिते,
प्रभूत शात कुम्भ-कुम्भ कुम्भि कुम्भ सुस्तनि।
प्रशस्त मन्दहास्य चूर्ण-पूर्ण सौख्यसागरे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।६।।
मृडाल वालवल्लरी तरङ्ग रङ्ग दोर्लते,
लताग्र लास्य लोल नील लोचना विलोकने।
ललल्लुलन् मिलन्मनोज मुग्ध मोहमाव्रजे,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।७।।
सुवर्णमालिकांचिते त्रिरेख कम्बु कण्ठके,
त्रिसूत्र मङ्गलीगुणत्रिरत्न दूर दीप्यते।
सलोल नील कुन्तले प्रसून गुच्छ गुम्फिते,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।८।।
नितम्ब विम्ब लम्बमान पुष्पमेखलागुणे,
प्रशस्त रत्न किंकिणी कलाप मध्य मञ्जुले।
करीन्द्र सुण्डदण्डिका वरोह शोभगौरके,
कदाकरिष्यसीह मां कृपाकटाक्ष भाजनम्।।९।।